# पश्चाताप - 8

**अव्यक्त बापदादा** (19.09.1972) **:-**

➳ _ ➳ अपने को महावीर समझते हो ना। महावीर कभी भी किसी मजबूरी को मजबूरी नहीं समझेंगे। एक सेकेण्ड में मजबूती के आधार से मजबूरी को समाप्त कर देते हैं। ऐसे ही **अंगद समान अपने बुद्धि रुपी पांव को एक बाप की याद में स्थित करना है, जो कोई भी हिला न सके।**

➳ _ ➳ कल्प पहले भी ऐसे ही बने थे ना, याद आता है? जब कल्प पहले ऐसे बने थे, तो वही पार्ट रिपीट करने में क्या मुश्किल है? **अनेक बार किये हुये पार्ट को रिपीट करना मुश्किल होता है?**

➳ _ ➳ तो आप बहुत बहुत पदम भाग्यशाली हो। इतने सारे विश्व के अन्दर बाप को जानने और अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करने वाले कितने थोड़े हैं? अनगिनत नहीं हैं, गिनती वाले हैं। **उन थोड़े जानने वालों में आप हो ना। तो पदमापदम भाग्यशाली नहीं हुए?**

➳ _ ➳ **अभी तो दुनिया अज्ञान की नींद में सोई है और आप अनेकों में से थोड़ी-सी आत्माएं बाप के वर्से के अधिकारी बन रहे हो।** जब वह सभी जाग जावेंगे कोशिश करेंगे कि हम भी कुछ कणा-दाना ले जावें, लेकिन क्या होगा? ले सकेंगे? जब लेट हो जावेंगे तो क्या ले पावेंगे?

➳ _ ➳ उस समय आप सभी आत्माओं को भी **अपने श्रेष्ठ भाग्य का प्रत्यक्ष रुप में साक्षात्कार होगा।** अभी तो गुप्त है ना। अभी गुप्त में न बाप को जानते हैं, न आप श्रेष्ठ आत्माओं को जानते हैं। साधारण समझते हैं फिर भी पा न सकेंगे।

➳ _ ➳ बताओ, **उस समय आपको अपने ऊपर कितना नाज़ होगा कि हम तो पहले से ही पहचान कर अधिकारी बन गये हैं।** ऐसी खुशी में रहना चाहिए। क्या मिला है, कौन मिला है और फिर क्या-क्या होने वाला है। यह सभी जानते हुए सदैव अतिइन्द्रिय सुख में झूमते रहना है।

➳ _ ➳ ऐसी अवस्था है कि **कभी कभी पेपर्स हिला देते हैं? हिलते तो नहीं हो? घबराते तो नहीं हो?** कि एक दो से सुनकर घबराने की लहर आती है, फिर अपने को ठीक कर देते हो? रिजल्ट क्या समझते हो?

---

➢➢ हनुमान अंगद से श्रेष्ठ क्यों ?

➳ _ ➳ निरहंकारी / निर्मानता / विनम्रता

→ अंगद ने पाँव उठाने का चैलेंज किया

- यह एक सूक्षम अहंकार था

➳ _ ➳ हृदय की सरलता

➳ _ ➳ मन / बुधी हलचल में नहीं

→ जब सीता नहीं मिली यो हनुमान फिर भी हलचल में नहीं आया

- पर अंगद भी हलचल में था

---

➢➢ तीव्र पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ राज्युक्त अर्थात

→ दूसरों के स्वभाव को समझना

- की यह इसका स्वभाव है

➳ _ ➳ अगर किसी संस्कार से मुक्त होना है तो यह सोचिये की

→ इस संस्कार से मुक्त होना

- मेरे लिए बहुत ज्यादा आसान है

➳ _ ➳ लिस्ट निकालिए की

→ किन किन बातों में टाइम वेस्ट होता है

→ किन किन बातों में एनर्जी वेस्ट होती है

- विकारों की कल्पना और क्रिया दोनों में समान एनर्जी व्यय होती है

➳ _ ➳ उपवास रखें

→ संकल्पों का

→ संयम का

- योगी का श्रृंगार है संयम

➳ _ ➳ साधना अभाव में होती है

→ जब यग्य में कुछ नहीं था...

- तभी सबसे ज्यादा साधना हुई थी

---

➢➢ अंत में किन किन बातों का पश्चाताप का होगा ?

➳ _ ➳ ज्ञान रतन नहीं धारण कर पाए

➳ _ ➳ योग नहीं कर पाए

➳ _ ➳ धारणाएं जीवन में अपना नहीं पाएं

➳ _ ➳ सेवाओं से खूब पुण्य कमा सकते थे

---